पाठ ११ : रहीम के दोहे

लेखक: रहीम

कक्षा : सातवीं

विषय : हिन्दी

प्रस्तुतकर्ता : प्रतिभा रोकड़े
प्रशिक्षित स्नातक शिक्षिका (हिन्दी/संस्कृत)
परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय – ३ ,तारापुर

प्यारे बच्चों,इस पाठ में हम देखेंगे कि श्री रहीम के दोहे हमें कई तरह से नैतिक शिक्षा और जीवन का गहरा ज्ञान देते है | पाठ में दिए गए दोहों में सच्चे मित्र,सच्चे प्रेम,परोपकार,मनुष्य की सहनशक्ति आदि के बारे में बहुत ही सरल और मनोहर ढंग से बताया है |

कहि रहीम संपति सगे ,बनत बहुत बहु रीत |
बिपति कसौटी जे कसे ,तेई साँचे मीत ||

अर्थ : रहीम के इस दोहे में वे कहते है की हमारे सगे-संबंधी तो किसी संपति की तरह होते है ,जो बहुत सारे रिती-रिवाजों के बाद बनते है| परंतु जो व्यक्ति मुसीबत में आपकी सहायता कर आपके काम आए ,वही आपका सच्चा मित्र होता है |

शब्दार्थ

संपति – धन–दौलत

सगे – अपने

बनत – बन जाते है

बहु – बहुत से

रीत – ढंग

विपति – मुसीबत

तेई – वही

साँचे – सच्चे

मीत – मित्र

जाल परे जल जात बहि , तजि मीनन को मोह |
रहिमन मछरी नीर को , तऊ न छाडती छोह ||

अर्थ : रहीम दास के इस दोहे में उन्होंने सच्चे प्रेम के बारे में बताया है | उनके अनुसार , जब नदी में मछली पकड़ने के लिए जाल डालकर बाहर निकाला जाता है ,तो जल तो उसी समय बाहर निकल जाता है | उसे मछली से कोई प्रेम नहीं होता | मगर मछली पानी के प्रेम को कभी भूल नहीं पाती और उसी के वियोग में प्राण त्याग देती है |

शब्दार्थ :

जाल - जाल

जल - पानी

बहि - बहना

तजि - त्यागना

मीनन – मछली

मोह – प्रेम

मछरी – मछली

छोह –प्रेम

तरुवर फल नहिं खात हैं ,सरवर पियत न पान |
कहि रहीम परकाज हित ,संपति – सचही सुजान ||

अर्थ : रहीम जी ने अपने इस दोह में कहा है कि जिस प्रकार वृक्ष अपना फल खुद नहीं खाते और नदी - तालाब अपना पानी स्वयं नहीं पीते | ठीक उसी प्रकार , सज्जन और अच्छे व्यक्ति अपने संचित धन का उपयोग केवल अपने लिए नहीं करते ,वो उस धन से दूसरों का भला करते हैं |

शब्दार्थ :

तरुवर – वृक्ष

खात – खाते

सरवर – सरोवर

पियत – पीते

पान – पानी

परकाज – दूसरे का कार्य

हित – भलाई

संपति – धन – दौलत

सचहि – जोड़ते है

सुजान – सज्जन

थोथे बादर क्वार के ,ज्यों रहीम घहरात |
धनी पुरुष निर्धन भए ,करें पाछिली बात ||

अर्थ : रहीम जी ने इस दोहे में कहा है कि जिस प्रकार बारिश और सर्दी के बीच के समय में बादल केवल गरजते हैं , बरसते नहीं है | उसी प्रकार कंगाल होने के बाद अमीर व्यक्ति अपने पिछले समय की बड़ी - बड़ी बाते करते रहते हैं , जिनका कोई मूल्य नहीं होता है |

शब्दार्थ :

थोथे – खोखले

बादर – बादल

क्वार – आश्विन का महिना

घहरात – गहराना

पाछिली – पिछली

धरती की - सी रीत है ,सीत घाम और मेह |
जैसी परे सो सहि रहे , त्यों रहीम यह देह ||

अर्थ : रहीम जी ने अपने इस दोहे में मनुष्य के शरीर की सहनशीलता के बारे में बताया है | वो कहते है कि मनुष्य के शरीर की सहनशक्ति बिल्कुल इस धरती के समान ही है | जिस तरह धरती सर्दी,गर्मी,बरसात आदि सभी मौसम झेल लेती है ,ठीक उसी तरह हमारा शरीर भी जीवन के सुख – दुख रूपी हर मौसम को सहन कर लेता है |

शब्दार्थ :

धरती – भूमि

रीत – नियम

सीत – शरद

घाम – ग्रीष्म

मेह - वर्षा

सहि – सहना

त्यों –उसी प्रकार

धन्यवाद